शोध पत्र- हिन्दी

चन्दवरादायी के रासों से वैज्ञानिक तत्वों का समावेश

* अनीता देवी

* सहप्राध्यापक राजकीय महाविद्यालय जीन्द

आदिकालीन साहित्य में मुख्यतः चार काव्य–परम्परा रही हैं, रासों परम्परा नाथ–परम्परा, जैन साहित्य पर कालान्तर से अप्रामाणिकता व संदिग्धा का प्रश्न चिह्न लगता रहा है। इतना संदिग्ध होने पर भी इस साहित्य के महत्व को कम नही आका जा सकता।

रासो साहित्य में सबसे अधिक महत्व 'चन्दवरदायी' कृत पृथ्वीराजरासो का है। 'चंन्दवरदायी' पृथ्वीराज का समकालीन, उसका मित्र, योद्धा एवं शुरवीर था। यही कारण है कि पृथ्वीराजरासों को युद्धवर्णन, व्यूहवर्णन अत्यन्त सजीव बन पड़े हैं। कवि चन्द ने स्वय को धर्म राजनीति नवरस शट्भाषा पुराण और कुरांन का ज्ञाता घोषित किया था। युद्ध वर्णनों में अनेक बार कबंधो के उठाने नाचने और युद्ध करने का उल्लेख प्राप्त होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि राहु के अमर कबंध की अपने शत्रु के प्रति प्रतिक्रिया ने शनैः–शनैः साहित्य में नर–कबंधो द्वारा युद्ध की परम्परा डालने की प्रेरणा दी थी। साहित्यिक वर्णनों में अतिश्योक्ति की अभिव्यञजना तो स्पष्ट है ही, परन्तु यह भी समझ में आता है कि युद्ध की विषम परिस्थितियों के बीच में परम उत्साही कबंध अपने जीवित प्रतिपक्षी अथवा अपने वार के सम्मुख आने वाले अन्य शत्रु आदि पर रक्त की क्षिप्रता और पूर्व जोश आदि के कारण कुछ समय तक प्रहार करते रहे। इसकी पुष्टि के लिए गौरेया पक्षी का उदाहरण हमारे सामने है। गौरेया का सिर काट देने के उपरान्त देखा गया है कि उसका सिर काफी दूर तक उड़ता रहा हैं और तत्पश्चात धीरे–धीरे शान्त होता है। निश्चय ही चन्दवरदायी के युद्ध–वर्णन वैज्ञानिक नियमों की कसौटी पर खरे उतरते है। कबंध–युद्ध को मात्र कवि–कल्पना या अतिशयोक्ति कह देना कदापि उचित नही है। ये नियम जीव–विज्ञान के पूर्णतः अनुकूल है।

चन्दवरदायी ने युद्ध–वर्णन अत्यन्त सजीवता के साथ किया है और इसे हम केवल कवि–कल्पना मात्र नहीं कर सकते क्योंकि चन्दवरदायी खुद एक शूरवीर योद्धा था। यह किसी दरबारी कवि की जीविका उपार्जन के लिए सृजित वह काव्य नहीं है जो विलास–वासनोपभोग हेतु आश्रयदाता को प्रसन्न करने भर के लिए किया गया हो। निश्चित तौर पर चन्दवरदायी दरबारी कवि थे, उनका आश्रयदाता राजा था परन्तु चंद और पृथ्वीराज घनिष्ट मित्र भी थे। रासो से प्राप्त हुए अन्तः साक्ष्य के अनुसार ये दोनों मित्र एक ही दिन पैदा हुए थे और एक ही दिन मरे। पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गौरी के अन्तिम युद्ध में चौहान को बंदी बना लिया जाने के समाचार से दुखी चन्दवरदायी वीरभद्र से कहते है कि हम दोनों साथ जन्मे, एक ही स्थान पर सदैव साथ रहे। हम दोनों स्नेह के बंध में तो बंधे ही थें, परन्तु राजा की मुझसे हार्दिक प्रति भी थी।'' महाराजा पृथ्वीराज के साथ चंदवरदायी अक्सर युद्ध में जाते थे। उस समय वीरतापूर्ण अल्प जीवन को भीरूतापूर्ण दीर्घायु से श्रेष्ठतर माना जाता था। चंदवरदायी ने एक स्थान पर कहा भी है।

^^ckjg cjl yi dlidj thoi] vki rijg yi ft ; f'k;kj cjl vVkjg {kf=; thoi] vkxi thou dki f/kDdkjA''

चन्दवरदायी द्वारिका से लौटता हुआ पट्नपुर पहुँचता ही था कि उसे पृथ्वीराज का पत्र मिला कि गज्जनेश आ गया है। पत्र पढ़ते ही चन्द कूच करता हुआ दिल्ली जा पहुँचा। कुन्नौज युद्ध में पृथ्वीराज की आज्ञा के बिना ही चन्द ने युद्ध क्षेत्र में अपना घोड़ा कुदा दिया। यवन सेना को तितर–बितर कर धमासन मचाकर उसे खदेड़ दिया किन्तु शरीर पर एक भी घाव नही आने दिया। मुहम्मद गौरी के साथ हुए अन्तिम युद्ध में पृथ्वीराज के बंदी बनाकर गजनी ले जाए जाने पर चन्दवरदायी राजा के कार्य के लिए गजनी को भेज देता है। रंगभूमि में पृथ्वीराज के शब्द–भेदी बाण–विधा के प्रदर्शन के समय चंद अपने वाक् चातुर्य से पृथ्वीराज को गौरी के मचान की ऊँचाई के समान बताकर सुल्तान का अवसान करवा देता और तत्काल ही अपनी जटाओं से छुरी निकालकर अपना शीष काट डालता हैं।

चन्दवरदायी ने अपने ग्रन्थ में अपने तन्त्र–मन्त्र ज्ञान का भी खुलकर प्रयोग किया है। वे एक सिद्ध पुरूष थे। वरदायी उनका नाम न होकर उनकी उपाधि थी। उन्होंने अपने सिद्धि बल से अनेक चमत्कार पूर्ण कार्य किए हैं, जिनका उल्लेख उन्होंने अपने रासो ग्रन्थ में भी किया है। वास्तव में मन्त्र में शक्ति विद्यमान होती है। इस शक्ति की वैज्ञानिकता को विद्वानों ने स्वीकार किया है। डा0 राजेन्द्र कुमार का इस विषय में मत है। कि मंत्रोपचार सुशुम्ना के सिरे पर स्थित प्रसुप्त ऊर्जा को दीप्त करता है और अन्त में मस्तिष्क में पहुँचकर चारों और प्रकाश फैलाता है। युद्ध–वर्णन का तन्त्र–मन्त्र के ज्ञान के साथ–साथ व्यूहवर्णन में भी अपनी वैज्ञानिकता का परिचय दिया है। व्यूह–रचना कोई साधारण कार्य नहीं है। इस प्रक्रिया में वैज्ञानिकता आधार सहज ही देखा जा सकता है। युद्ध क्षेत्र में

कुशल युद्ध–संचालन के लिए व्यूह–रचना की आवश्यकता होती हैं, यह निर्विवाद सत्य है। युद्ध–काव्यों में व्यूह रचना का वर्णन मिलता है। अभिमन्यु–वध के संदर्भ में 'चंद्रव्यूह' के नाम से सभी परिचित है। चन्दवरदायी ने भी अपने काव्य में चक्रव्यूह और कुंडल व्यूह का कुशलतापूर्वक प्रयोग किया है। इस सन्दर्भ में निम्न उदाहरण प्रस्तुत है।

^^bl fuflohj df<; lej] dky Qn vfj df<<A
gkr iHkkr fp=uk ig] pØ0;g jfp vf<MAA*'

यहाँ शत्रु को मृत्यु के फंदों में डाले हुए उस समय युद्ध क्षेत्र में वीरों की रात्रि व्यतीत हुई। प्रातः काल होते ही चित्रक प्रभु चक्रव्यूहाकार में अपनी सेना सजाएँ सुसज्जित खड़े थे। चन्दवरदायी ने श्रृंगार प्रसाधनों का प्रर्याप्त वर्णन अपने काव्य में किया है। यहा उने सौंदर्य–विधान के साथ ही रसायन–विज्ञान की जानकारी का भी बोध होता है। इसी प्रकार वृक्षो, सब्जियों और फलों की विस्तृत सूचियों से अनेक वनस्पिति ज्ञान का परिचय प्राप्त होता है। सामुद्रिक–शास्त्र और ज्योतिश विज्ञान का भी उन्हें अच्छा ज्ञान था, यह रासों में तत्संबधी प्रसंगो में सहज द्रष्टव्य हो जाता है। ज्योनारों के वर्णन में विविध व्यंजनों के उल्लेख में जहां उनके पाक–विज्ञान का परिचय मिलता है वही उनका आयुर्वेद विज्ञान विशयक ज्ञान भी रासों में यत्र–तत्र सहज परिलक्षित होता है। एक स्थल पर वे लिखते है कि विशाक्त भोजन को परखने हेतु राजा को निम्न पक्षियों को अपनी पाठशाला या भोजन–कक्ष के पास रखना चाहिए। इस विषय में उदाहरण है।

^^ddj udj djkp dfi] fgju gl ld ekjA
vlu djr ui df'lk f<x] lpd tgj pdkjAA

चन्दवरदायी ने अपने रासो ग्रन्थ में युद्ध–वर्णन व्यूह–रचना श्रृगार–वर्णन में वैज्ञानिकता के साथ–साथ भाव–वर्णन में भी अपने विज्ञान ज्ञान का परिचय दिया है। कविचंद द्वारा महल की स्त्रियों का वर्णन सुनकर महराजा जयचंद आश्चर्य चकित होकर चन्दवरदायी से पूछते है कि इन असूर्य पश्याओं का वर्णन कैसे किया। इस पर चन्दवरदायी ने जो उतर दिया वह मनोविज्ञान–सम्मत ही है। चंद कहते है कि कुछ नेत्रों के इशारों को देखकर, कुछ शब्दों को सुनकर और कुछ लक्ष्णों पर विचार करके मैनें उनके विषय में जान लिया था। वास्तव में चंद कवि को अनेक बातों की जानकारी अपनी कर्नाट की कणिका जो दूत–कार्य में चतुर ठग विद्या में प्रवीण और गुप्त रहस्यों की ज्ञाता थी, से प्राप्त होता था।

चन्द पृथ्वीराज के अभिन्न मित्र, योद्धा थे, इसलिए वे अपने काव्य में युद्धो का वर्णन, व्यूह वर्णन व भाव–वर्णन का इतनी सजीवता के साथ वर्णन कर सके। इतनी सजीवतापूर्वक वर्णन करने के कारण ही उनके काव्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश हो सका। अंत में हम यह कर सकते है कि उनके रासो ग्रन्थ पर प्रामाणिकता का सन्देह भले ही हो किन्तु उनकी योग्यात, उनके विज्ञान सम्मत दृष्टिकोण के बारे में सन्देह नहीं किया जा सकता।